शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN

ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-3 Issue-1
15 Jan-2012

जनसंचार माध्यम एवं साहित्य के अन्तर्सबंध

डॉ0 ए0 के0 सिंह

प्रभारी, इन्स्टीट्यूट ऑफ जर्नलिज्म एण्ड मॉस कम्यूनिकेशन, छत्रपति शाहूजी महाराज वि0वि0, कानपुर

www.shodh.net

जनसंचार माध्यम एवं साहित्य के अन्तर्सबंध

साहित्य से मानव जीवन का शुरु से ही एक अभिन्न व करीबी नाता रहा है। वह जाने अनजाने में इसका प्रेषक व ग्राही दोनों प्रकार भी भूमिकाओं को निभाता रहा है यह भी सत्य है कि आज जन की अभिव्यक्ति में कलात्मक सौन्दर्य व कुशलता उस स्तर की नही होती है जो कि एक साहित्यकार में होती है किन्तु, साहित्य से जुड़ने, देखने सुनने व प्रभावित होने की मनोदशा में अवश्य होता है।

साहित्य को उचित माध्यम मिल जाये तो वह उसके प्रभाव क्षेत्र का विस्तार और अधिक गहरा हो जाता है। साहित्य को शुरू से ही विभिन्न माध्यमों से आम जन तक पहुँचाने का प्रयास होता रहा है। एक ही साहित्य को भिन्न-भिन्न माध्यम अलग-अलग ढंग से लोगों तक पहुँचाते हैं। इस प्रकार माध्यमों से साहित्य का एक बहुत ही करीबी नाता रहा है।

माध्यम और साहित्य के आपसी रिश्ते के विविध पक्षों पर काफी कार्य हुए है। किन्तु शोध के क्षेत्र में यह एक बहुत ही विशद विषय है इस पर लगातार कार्य करते रहने की आवश्यकता है।

डॉ0 योगेन्द्र प्रताप सिंह द्वारा लिखी गयी 'मीडिया और साहित्य' उक्त दिशा में एक प्रशंसनीय प्रयास कहा जा सकता है जो हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार के क्षेत्र में शोध कार्य करने वाले नये शोधार्थी के लिए एक मार्ग दर्शक का भी कार्य करती है।

उक्त पुस्तक में विविध प्रकार के माध्यम और उसके माध्यम से प्रस्तुत किये जाने वाले साहित्य के बारे में बहुत ही व्यवस्थित ढंग से विश्लेषणात्मक वर्णन किया गया है। इस कार्य के लिए पुस्तक के लेखक ने बहुत बड़ी संख्या में विषय सन्दर्भों का आवश्यकतानुसार उल्लेख किया है।

पुस्तक के पहले अध्याय में विभिन्न प्रकार के पारम्परिक व आधुनिक माध्यमों के बारे में चर्चा की गयी है। इसमें माध्यमों के वर्तमान स्वरूप व उसके ऐतिहासिक पक्ष के बारे में विशेष रूप से बताया गया है।

लोक नाट्य सबसे पहला व बहुत ही प्रचलित माध्यम रहा है। इसके माध्यम से साहित्य आम जन तक बहुत ही सहजता के साथ पहुँचा रहा है। किन्तु इसमें तमाम ऐसी बाते हैं जिसे एक शोधार्थी को अवश्य जानना चाहिए। उदाहरण के लिए लोक नाट्य माध्यम किस प्रकार विकसित हुए, कैसे आगे बढ़ें किस प्रकार की समस्याएँ आयी आदि। इस अध्याय में इस माध्यम के विकास के विविध पक्षों के बारे में बहुत ही विस्तार के साथ चर्चा की गयी है। वे शोधार्थी जो कि लोक नाट्य माध्यम पर किसी प्रकार का शोध कार्य कर रहे है उनके लिए इसमें काफी सामग्री प्राप्त हो सकती है।

साहित्य का विस्तार प्रिन्ट माध्यम के द्वारा ही प्रभावी ढंग से हुआ। समाचार पत्रों, व पत्रिकाओं के आ जाने के साथ ही साहित्यिक पत्रकारिता की जो यात्रा आरम्भ हुई उसके बारे में पत्रकारिता और साहित्य की अन्तरंग यात्रा में विस्तार के साथ जानकारी दी गयी है। यह एक बहुत ही उपयोगी अध्याय है। इसमें भारतीय हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता के ऐतिहासिक पक्षों विविध आयामों के बारे में चर्चा करने के साथ ही उस पर विविध कमेंट व विचार भी रखे गये हैं।

प्रिन्ट माध्यम से की जाने वाली साहित्यिक पत्रकारिता विषय पर किसी प्रकार का शोध करने के इच्छुक शोधार्थी के लिए यह उपयोगी अन्तर्दृष्टि पैदा करता है।

इलेक्ट्रानिक माध्यमों ने साहित्यिक पत्रकारिता के स्वरूप को काफी बदल करके रख दिया है। इस विषय पर अभी भी काफी शोध कार्य की आवश्यकता है। उसी कड़ी के प्रयास में 'इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं साहित्य' अध्याय में काफी उपयोगी चर्चा की गयी है।

फिल्म माध्यम का साहित्य से पुराना नाता रहा है। इससे विषय पर भी काफी बाते लिखी जा चुकी हैं। किन्तु यह भी एक अनवरत शोध का विषय है। ऐसे तमाम प्रश्न है जिनके बारे में उत्तर की तलाश नये नये सन्दर्भों में है। साहित्य एवं चित्रपट अध्याय में ऐसे ही तमाम प्रश्नों को लेकर विश्लेषणात्मक चर्चा किया गया है।

पुस्तक के अन्य दो अध्यायों में रचना का अन्य माध्यम में रूपान्तरण तथा साहित्य एवं माध्यम विषय पर गंभीर चर्चा की गयी है।

साहित्य एवं मीडिया विषय के विस्तार क्षेत्र को देखते हुए प्रस्तुत पुस्तक में सभी बातों पर चर्चा कर पाना कदापि संभव नही है। इसके बावजूद लेखक ने मीडिया व साहित्य विषय के कई पक्षों महत्वपूर्ण चर्चा की है।

पुस्तक की भाषा के सम्बन्ध में यह कहना समीचीन होगा कि यह माध्यम एवं साहित्य

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN

ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-3 Issue-1
15 Jan-2012

जनसंचार माध्यम एवं साहित्य के अन्तर्सबंध

डॉ0 ए0 के0 सिंह

प्रभारी, इन्स्टीट्यूट ऑफ जर्नलिज्म एण्ड मॉस कम्यूनिकेशन, छत्रपति शाहूजी महाराज वि0वि0, कानपुर

www.shodh.net

की संरचनात्मक विशिष्टताओं को विश्लेषित करते हुए सूत्रात्मक ढंग से माध्यमों की सीमाओं एवं संभावनाओं को आलोचित करने में समर्थ है।